Luk

Chapter 6

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

Ἐγένετο	δὲ	ἐν	σαββάτῳ	διαπορεύεσθαι	αὐτὸν	διὰ	σπορίμων;	καὶ	ἔτιλλον
हुआ	और	में	सब्त	जाना	उसका	से	खेतों	और	तोड़ते-थे
G1096	G1161	G1722	G4521	G1279	G0846	G1223	G4702	G2532	G5089

οἱ	μαθηταὶ	αὐτοῦ,	καὶ	ἤσθιον	τοὺς	στάχυας,	ψώχοντες	ταῖς	χερσίν.
–	चेले	उसके	और	खाते-थे	–	बालों	मलते-हुए	–	हाथों-से
G3588	G3101	G0846	G2532	G2068	G3588	G4719	G5597	G3588	G5495

> अब ऐसा हुआ कि सब्त के एक दिन यीशु जब अनाज के कुछ खेतों से जा रहा था तो उसके शिष्य अनाज की बालों को तोड़ते, हथेलियों पर मसलते उन्हें खाते जा रहे थे।

2

τινὲς	δὲ	τῶν	Φαρισαίων	εἶπαν,	Τί	ποιεῖτε	ὃ	οὐκ	ἔξεστιν	τοῖς
कुछ	और	–	फरीसियों-में-से	कहा	क्या	करते-हो	जो	नहीं	उचित-है	–
G5100	G1161	G3588	G5330	G3004	G5101	G4160	G3739	G3756	G1832	G3588

σάββασιν?
सब्तों-में
G4521

> तभी कुछ फरीसियों ने कहा, “जिसका सब्त के दिन किया जाना उचित नहीं है, उसे तुम लोग क्यों कर रहे हो?”

3

καὶ	ἀποκριθεὶς	πρὸς	αὐτοὺς,	εἶπεν	ὁ	Ἰησοῦς,	Οὐδὲ	τοῦτο	ἀνέγνωτε,
और	उत्तर-देकर	से	उनसे	कहा	–	यीशु-ने	यह-भी-नहीं	यह	पढ़ा
G2532	G0611	G4314	G0846	G3004	G3588	G2424	G3761	G3778	G0314

ὃ	ἐποίησεν	Δαυὶδ,	ὁπότε	ἐπείνασεν	αὐτὸς,	καὶ	οἱ	μετ’	αὐτοῦ	ὄντες;
जो	किया	दाऊद-ने	जब	भूखा	वह	और	–	साथ	उसके	होनेवालों-ने
G3739	G4160	G1138	G3753	G3983	G0846	G2532	G3588	G3326	G0846	G1510

> उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा, “क्या तुमने नहीं पढ़ा जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे, तब दाऊद ने क्या किया था?

4

ὡς	εἰσῆλθεν	εἰς	τὸν	οἶκον	τοῦ	Θεοῦ,	καὶ	τοὺς	ἄρτους	τῆς
कैसे	गया	में	–	घर	–	परमेश्वर-के	और	–	रोटियों-को	–
G5613	G1525	G1519	G3588	G3624	G3588	G2316	G2532	G3588	G0740	G3588

προθέσεως	λαβὼν,	ἔφαγεν,	καὶ	ἔδωκεν	τοῖς	μετ’	αὐτοῦ,	οὓς	οὐκ	ἔξεστιν
भेंट-की	लेकर	खाया	और	दिया	–	साथ	उसके-वालों-को	जो	नहीं	उचित-है
G4286	G2983	G5315	G2532	G1325	G3588	G3326	G0846	G3739	G3756	G1832

φαγεῖν,	εἰ	μὴ	μόνους	τοὺς	ἱερεῖς?
खाना	सिवाय	–	केवल	–	याजकों
G5315	G1487	G3361	G3441	G3588	G2409

> क्या तुमने नहीं पढ़ा कि उसने परमेश्वर के घर में घुस कर, परमेश्वर को अर्पित रोटियाँ उठा कर खा ली थीं और उन्हें भी दी थीं, जो उसके साथ थे? जबकि याजकों को छोड़कर उनका खाना किसी के लिये भी उचित नहीं?”

5

καὶ	ἔλεγεν	αὐτοῖς,	Κύριός	ἐστιν	τοῦ	σαββάτου	ὁ	Υἱὸς	τοῦ	ἀνθρώπου.
और	कहता-था	उनसे	प्रभु	है	–	सब्त-का	–	पुत्र	–	मनुष्य-का
G2532	G3004	G0846	G2962	G1510	G3588	G4521	G3588	G5207	G3588	G0444

> उसने आगे कहा, “मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।”

6

Ἐγένετο	δὲ	ἐν	ἑτέρῳ	σαββάτῳ,	εἰσελθεῖν	αὐτὸν	εἰς	τὴν	συναγωγὴν
हुआ	और	में	दूसरे	सब्त-को	जाना	उसका	में	–	आराधनालय
G1096	G1161	G1722	G2087	G4521	G1525	G0846	G1519	G3588	G4864

καὶ	διδάσκειν;	καὶ	ἦν	ἄνθρωπος	ἐκεῖ,	καὶ	ἡ	χεὶρ	αὐτοῦ	ἡ	δεξιὰ
और	सिखाना	और	था	मनुष्य	वहां	और	–	हाथ	उसका	–	दाहिना
G2532	G1321	G2532	G1510	G0444	G1563	G2532	G3588	G5495	G0846	G3588	G1188

ἦν	ξηρά.
था	सूखा
G1510	G3584

> दूसरे सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह यहूदी आराधनालय में जाकर उपदेश देने लगा। वहीं एक ऐसा व्यक्ति था जिसका दाहिना हाथ मुरझाया हुआ था।

7

παρετηροῦντο	δὲ	αὐτὸν	οἱ	γραμματεῖς	καὶ	οἱ	Φαρισαῖοι,	εἰ	ἐν
देखते-थे	और	उसे	–	शास्त्री	और	–	फरीसी	यदि	में
G3906	G1161	G0846	G3588	G1122	G2532	G3588	G5330	G1487	G1722

τῷ	σαββάτῳ	θεραπεύει,	ἵνα	εὕρωσιν	κατηγορεῖν	αὐτοῦ.
–	सब्त	चंगा-करता-है	कि	पाएं	दोष-लगाना	उसपर
G3588	G4521	G2323	G2443	G2147	G2723	G0846

> वहीं यहूदी धर्मशास्त्रि और फ़रीसी यह देखने की ताक में थे कि वह सब्त के दिन किसी को चंगा करता है कि नहीं। ताकि वे उस पर दोष लगाने का कोई कारण पा सकें।

8

αὐτὸς	δὲ	ᾔδει	τοὺς	διαλογισμοὺς	αὐτῶν,	εἶπεν	δὲ	τῷ	ἀνδρὶ	τῷ
वह	परन्तु	जानता-था	–	विचारों-को	उनके	कहा	और	–	पुरुष-से	–
G0846	G1161	G1492	G3588	G1261	G0846	G3004	G1161	G3588	G0435	G3588

ξηρὰν	ἔχοντι	τὴν	χεῖρα,	Ἔγειρε,	καὶ	στῆθι	εἰς	τὸ	μέσον.	καὶ	ἀναστὰς,
सूखा	जिसमें-था	–	हाथ	उठ	और	खड़ा-हो	में	–	बीच	और	उठकर
G3584	G2192	G3588	G5495	G1453	G2532	G2476	G1519	G3588	G3319	G2532	G0450

ἔστη.
खड़ा-हुआ
G2476

> वह उनके विचारों को जानता था, सो उसने उस मुरझाये हाथ वाले व्यक्ति से कहा, “उठ और सब के सामने खड़ा हो जा।” वह उठा और वहाँ खड़ा हो गया।

9

εἶπεν	δὲ	ὁ	Ἰησοῦς	πρὸς	αὐτούς,	Ἐπερωτῶ	ὑμᾶς,	εἰ	ἔξεστιν	τῷ
कहा	और	–	यीशु-ने	से	उनसे	पूछता-हूं	तुमसे	यदि	उचित-है	–
G3004	G1161	G3588	G2424	G4314	G0846	G1905	G4771	G1487	G1832	G3588

σαββάτῳ	ἀγαθοποιῆσαι	ἢ	κακοποιῆσαι?	ψυχὴν	σῶσαι	ἢ	ἀπολέσαι?
सब्त-में	भलाई-करना	या	बुराई-करना	प्राण	बचाना	या	नाश-करना
G4521	G0015	G2228	G2554	G5590	G4982	G2228	G0622

> तब यीशु ने लोगों से कहा, “मैं तुमसे पूछता हूँ सब्त के दिन किसी का भला करना उचित है या किसी को हानि पहुँचाना, किसी का जीवन बचाना उचित है या किसी का जीवन नष्ट करना?”

10

καὶ	περιβλεψάμενος	πάντας	αὐτοὺς,	εἶπεν	αὐτῷ,	Ἔκτεινον	τὴν	χεῖρά	σου.
और	चारों-ओर-देखकर	सबको	उनसे	कहा	उससे	बढ़ा	–	हाथ	अपना
G2532	G4017	G3956	G0846	G3004	G0846	G1614	G3588	G5495	G4771

ὁ	δὲ	ἐποίησεν,	καὶ	ἀπεκατεστάθη	ἡ	χεὶρ	αὐτοῦ.
–	और	किया	और	बहाल-हो-गया	–	हाथ	उसका
G3588	G1161	G4160	G2532	G0600	G3588	G5495	G0846

> यीशु ने चारों ओर उन सब पर दृष्टि डाली और फिर उससे कहा, “अपना हाथ सीधा फैला।” उसने वैसा ही किया और उसका हाथ फिर से अच्छा हो गया।

11	αὐτοὶ	δὲ	ἐπλήσθησαν	ἀνοίας,	καὶ	διελάλουν	πρὸς	ἀλλήλους	τί	ἂν
	वे	परन्तु	भर-गए	मूर्खता-से	और	बातें-करते-थे	से	आपस-में	क्या	कदाचित
	G0846	G1161	G4130	G0454	G2532	G1255	G4314	G0240	G5101	G0302

ποιήσαιεν	τῷ	Ἰησοῦ.
करें	–	यीशु-का
G4160	G3588	G2424

> किन्तु इस पर आग बबूला होकर वे आपस में विचार करने लगे कि यीशु का क्या किया जाये?

12	Ἐγένετο	δὲ	ἐν	ταῖς	ἡμέραις	ταύταις,	ἐξελθεῖν	αὐτὸν	εἰς	τὸ	ὄρος
	हुआ	और	में	–	दिनों	उन	जाना	उसका	पर	–	पहाड़
	G1096	G1161	G1722	G3588	G2250	G3778	G1831	G0846	G1519	G3588	G3735

προσεύξασθαι,	καὶ	ἦν	διανυκτερεύων	ἐν	τῇ	προσευχῇ	τοῦ	Θεοῦ.
प्रार्थना-करने-को	और	था	रात-भर-जागता-हुआ	में	–	प्रार्थना	–	परमेश्वर-की
G4336	G2532	G1510	G1273	G1722	G3588	G4335	G3588	G2316

> उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि यीशु प्रार्थना करने के लिये एक पहाड़ पर गया और सारी रात परमेश्वर की प्रार्थना करते हुए बिता दी।

13	καὶ	ὅτε	ἐγένετο	ἡμέρα,	προσεφώνησεν	τοὺς	μαθητὰς	αὐτοῦ,	καὶ
	और	जब	हुआ	दिन	बुलाया	–	चेलों-को	अपने	और
	G2532	G3753	G1096	G2250	G4377	G3588	G3101	G0846	G2532

ἐκλεξάμενος	ἀπ’	αὐτῶν	δώδεκα,	οὓς	καὶ	ἀποστόλους	ὠνόμασεν;
चुनकर	से	उनमें-से	बारह	जिन्हें	भी	प्रेरित	नाम-रखा
G1586	G0575	G0846	G1427	G3739	G2532	G0652	G3687

> फिर जब भोर हुई तो उसने अपने अनुयायियों को पास बुलाया। उनमें से उसने बारह को चुना जिन्हें उसने “प्रेरित” नाम दिया:

14	Σίμωνα	ὃν	καὶ	ὠνόμασεν	Πέτρον,	καὶ	Ἀνδρέαν	τὸν	ἀδελφὸν	αὐτοῦ;	καὶ
	शमौन	जिसे	भी	नाम-रखा	पतरस	और	अन्द्रियास	–	भाई	उसका	और
	G4613	G3739	G2532	G3687	G4074	G2532	G0406	G3588	G0080	G0846	G2532

Ἰάκωβον	καὶ	Ἰωάννην;	καὶ	Φίλιππον	καὶ	Βαρθολομαῖον;
याक़ूब	और	योहान्नान	और	फिलिप्पुस	और	बरतोलमाई
G2385	G2532	G2491	G2532	G5376	G2532	G0918

> शमौन (जिसे उसने पतरस भी कहा) और उसका भाई अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै,

15	καὶ	Μαθθαῖον	καὶ	Θωμᾶν;	καὶ	Ἰάκωβον	Ἁλφαίου;	καὶ	Σίμωνα	τὸν
	और	मत्ती	और	थोमा	और	याक़ूब	हल्फ़ाई-का	और	शमौन	–
	G2532	G3156	G2532	G2381	G2532	G2385	G0256	G2532	G4613	G3588

καλούμενον	Ζηλωτὴν;
कहलाता	ज़ेलोतेस
G2564	G2207

> मत्ती, थोमा, हलफ़ई का बेटा याकूब, और शमौन जिलौती;

16	καὶ	Ἰούδαν	Ἰακώβου;	καὶ	Ἰούδαν	Ἰσκαριὼθ,	ὃς	ἐγένετο	προδότης.
	और	यहूदा	याक़ूब-का	और	यहूदा	इस्करियोत	जो	हुआ	धोखेबाज़
	G2532	G2455	G2385	G2532	G2455	G2469	G3739	G1096	G4273

> याकूब का बेटा यहूदा, और यहूदा इस्करियोती (जो विश्वासघाती बना।)

17	καὶ	καταβὰς	μετ’	αὐτῶν,	ἔστη	ἐπὶ	τόπου	πεδινοῦ,	καὶ	ὄχλος	πολὺς
	और	उतरकर	साथ	उनके	खड़ा-हुआ	पर	स्थान	समतल	और	भीड़	बड़ी
	G2532	G2597	G3326	G0846	G2476	G1909	G5117	G3977	G2532	G3793	G4183

μαθητῶν	αὐτοῦ,	καὶ	πλῆθος	πολὺ	τοῦ	λαοῦ	ἀπὸ	πάσης	τῆς	Ἰουδαίας,
चेलों-की	उसके	और	बहुतायत	बड़ी	–	लोगों-की	से	सारे	–	यहूदिया
G3101	G0846	G2532	G4128	G4183	G3588	G2992	G0575	G3956	G3588	G2449

καὶ	Ἰερουσαλὴμ,	καὶ	τῆς	παραλίου	Τύρου,	καὶ	Σιδῶνος,
और	यरूशलेम	और	–	तटीय	सूर-के	और	सीदोन
G2532	G2419	G2532	G3588	G3882	G5184	G2532	G4605

> फिर यीशु उनके साथ पहाड़ी से नीचे उतर कर समतल स्थान पर आ खड़ा हुआ। वहीं उसके शिष्यों की भी एक बड़ी भीड़ थी। साथ ही समूचे यहूदिया, यरूशलेम, सूर और सैदा के सागर तट से अनगिनत लोग वहाँ आ इकट्ठे हुए।

18	οἳ	ἦλθον	ἀκοῦσαι	αὐτοῦ,	καὶ	ἰαθῆναι	ἀπὸ	τῶν	νόσων	αὐτῶν.	καὶ
	जो	आए	सुनने-को	उसकी	और	चंगे-होने-को	से	–	रोगों	अपने	और
	G3739	G2064	G0191	G0846	G2532	G2390	G0575	G3588	G3554	G0846	G2532

οἱ	ἐνοχλούμενοι	ἀπὸ	πνευμάτων	ἀκαθάρτων	ἐθεραπεύοντο.
–	सताए-जानेवाले	से	आत्माओं	अशुद्ध	चंगे-किए-जाते-थे
G3588	G1776	G0575	G4151	G0169	G2323

> वे उसे सुनने और रोगों से छुटकारा पाने वहाँ आये थे। जो दुष्टात्माओं से पीड़ित थे, वे भी वहाँ आकर अच्छे हुए।

19	καὶ	πᾶς	ὁ	ὄχλος	ἐζήτουν	ἅπτεσθαι	αὐτοῦ;	ὅτι	δύναμις	παρ’	αὐτοῦ
	और	सब	–	भीड़	ढूंढती-थी	छूने-को	उसे	क्योंकि	सामर्थ्य	से	उससे
	G2532	G3956	G3588	G3793	G2212	G0680	G0846	G3754	G1411	G3844	G0846

ἐξήρχετο	καὶ	ἰᾶτο	πάντας.
निकलता-था	और	चंगा-करता-था	सबको
G1831	G2532	G2390	G3956

> समूची भीड़ उसे छू भर लेने के प्रयत्न में थी क्योंकि उसमें से शक्ति निकल रही थी और उन सब को निरोग बना रही थी!

20	Καὶ	αὐτὸς,	ἐπάρας	τοὺς	ὀφθαλμοὺς	αὐτοῦ	εἰς	τοὺς	μαθητὰς	αὐτοῦ,
	और	वह	उठाकर	–	आंखें	अपनी	की-ओर	–	चेलों	अपने
	G2532	G0846	G1869	G3588	G3788	G0846	G1519	G3588	G3101	G0846

ἔλεγεν,	Μακάριοι	οἱ	πτωχοί,	ὅτι	ὑμετέρα	ἐστὶν	ἡ	βασιλεία	τοῦ	Θεοῦ.
कहता-था	धन्य	–	गरीब	क्योंकि	तुम्हारी	है	–	राज्य	–	परमेश्वर-का
G3004	G3107	G3588	G4434	G3754	G5212	G1510	G3588	G0932	G3588	G2316

> फिर अपने शिष्यों को देखते हुए वह बोला: “धन्य हो तुम जो दीन हो, स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है,

21	μακάριοι	οἱ	πεινῶντες	νῦν,	ὅτι	χορτασθήσεσθε.	μακάριοι	οἱ	κλαίοντες
	धन्य	–	भूखे	अब	क्योंकि	तृप्त-होगे	धन्य	–	रोनेवाले
	G3107	G3588	G3983	G3568	G3754	G5526	G3107	G3588	G2799

νῦν,	ὅτι	γελάσετε.
अब	क्योंकि	हंसोगे
G3568	G3754	G1070

> धन्य हो तुम, जो अभी भूखे रहे हो, क्योंकि तुम तृप्त होगे। धन्य हो तुम जो आज आँसू बहा रहे हो, क्योंकि तुम आगे हँसोगे।

22

μακάριοί	ἐστε	ὅταν	μισήσωσιν	ὑμᾶς	οἱ	ἄνθρωποι,	καὶ	ὅταν	ἀφορίσωσιν
धन्य	हो	जब	घृणा-करें	तुमसे	–	मनुष्य	और	जब	अलग-करें
G3107	G1510	G3752	G3404	G4771	G3588	G0444	G2532	G3752	G0873

ὑμᾶς,	καὶ	ὀνειδίσωσιν,	καὶ	ἐκβάλωσιν	τὸ	ὄνομα	ὑμῶν	ὡς	πονηρὸν,	ἕνεκα
तुम्हें	और	निन्दा-करें	और	निकाल-दें	–	नाम	तुम्हारा	जैसे	बुरा	के-कारण
G4771	G2532	G3679	G2532	G1544	G3588	G3686	G4771	G5613	G4190	G1752

τοῦ	Υἱοῦ	τοῦ	ἀνθρώπου;
–	पुत्र-के	–	मनुष्य-के
G3588	G5207	G3588	G0444

> “धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुमसे घृणा करें, और तुमको बहिष्कृत करें, और तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हारा नाम बुरा समझकर काट दें।

23

χάρητε	ἐν	ἐκείνῃ	τῇ	ἡμέρᾳ,	καὶ	σκιρτήσατε;	ἰδοὺ	γὰρ,	ὁ	μισθὸς
आनन्द-करो	में	उस	–	दिन	और	कूदो	देखो	क्योंकि	–	प्रतिफल
G5463	G1722	G1565	G3588	G2250	G2532	G4640	G3708	G1063	G3588	G3408

ὑμῶν	πολὺς	ἐν	τῷ	οὐρανῷ.	κατὰ	τὰ	αὐτὰ	γὰρ	ἐποίουν	τοῖς
तुम्हारा	बड़ा	में	–	स्वर्ग	के-अनुसार	–	उसी	क्योंकि	करते-थे	–
G4771	G4183	G1722	G3588	G3772	G2596	G3588	G0846	G1063	G4160	G3588

προφήταις	οἱ	πατέρες	αὐτῶν.
भविष्यवक्ताओं-से	–	पिता	उनके
G4396	G3588	G3962	G0846

> उस दिन तुम आनन्दित होकर उछलना-कूदना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा प्रतिफल है, उनके पूर्वजों ने भी भविष्यवक्ताओं के साथ ऐसा ही किया था।

24

Πλὴν	οὐαὶ	ὑμῖν	τοῖς	πλουσίοις,	ὅτι	ἀπέχετε	τὴν	παράκλησιν	ὑμῶν.
परन्तु	हाय	तुम्हें	–	धनियों	क्योंकि	पा-चुके-हो	–	सान्त्वना	तुम्हारी
G4133	G3759	G4771	G3588	G4145	G3754	G0568	G3588	G3874	G4771

> “तुमको धिक्कार है, ओ धनिक जन, क्योंकि तुमको पूरा सुख चैन मिल रहा है।

25

οὐαὶ	ὑμῖν	οἱ	ἐμπεπλησμένοι	νῦν,	ὅτι	πεινάσετε.	οὐαί	οἱ	γελῶντες	νῦν,
हाय	तुम्हें	–	तृप्त	अब	क्योंकि	भूखोगे	हाय	–	हंसनेवाले	अब
G3759	G4771	G3588	G1705	G3568	G3754	G3983	G3759	G3588	G1070	G3568

ὅτι	πενθήσετε	καὶ	κλαύσετε.
क्योंकि	शोक-करोगे	और	रोओगे
G3754	G3996	G2532	G2799

> तुम्हें धिक्कार है, जो अब भरपेट हो क्योंकि तुम भूखे रहोगे। तुम्हें धिक्कार है, जो अब हँस रहे हो, क्योंकि तुम शोकित होओगे और रोओगे।

26

οὐαὶ	ὅταν	καλῶς	ὑμᾶς	εἴπωσιν	πάντες	οἱ	ἄνθρωποι,	κατὰ	τὰ
हाय	जब	अच्छा	तुम्हारे-विषय-में	कहें	सब	–	मनुष्य	के-अनुसार	–
G3759	G3752	G2573	G4771	G3004	G3956	G3588	G0444	G2596	G3588

αὐτὰ	γὰρ	ἐποίουν	τοῖς	ψευδοπροφήταις	οἱ	πατέρες	αὐτῶν.
उसी	क्योंकि	करते-थे	–	झूठे-भविष्यवक्ताओं-से	–	पिता	उनके
G0846	G1063	G4160	G3588	G5578	G3588	G3962	G0846

> “तुम्हे धिक्कार है, जब तुम्हारी प्रशंसा हो क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा व्यवहार किया।

27

Ἀλλὰ	ὑμῖν	λέγω	τοῖς	ἀκούουσιν:	Ἀγαπᾶτε	τοὺς	ἐχθροὺς	ὑμῶν,	καλῶς	ποιεῖτε
परन्तु	तुम्हें	कहता-हूं	–	सुननेवालों	प्रेम-करो	–	शत्रुओं-को	अपने	भलाई	करो
G0235	G4771	G3004	G3588	G0191	G0025	G3588	G2190	G4771	G2573	G4160

τοῖς	μισοῦσιν	ὑμᾶς,
–	घृणा-करनेवालों-की	तुमसे
G3588	G3404	G4771

“ओ सुनने वालो! मैं तुमसे कहता हूँ अपने शत्रु से भी प्रेम करो। जो तुमसे घृणा करते हैं, उनके साथ भी भलाई करो।

28								
	εὐλογεῖτε	τοὺς	καταρωμένους	ὑμᾶς,	προσεύχεσθε	περὶ	τῶν	ἐπηρεαζόντων
	आशिष-दो	–	शाप-देनेवालों-को	तुम्हारे	प्रार्थना-करो	के-विषय-में	–	दुर्व्यवहार-करनेवालों-के
	G2127	G3588	G2672	G4771	G4336	G4012	G3588	G1908

ὑμᾶς.
तुम्हारे-साथ
G4771

उन्हें भी आशीर्वाद दो, जो तुम्हें शाप देते हैं। उनके लिए भी प्रार्थना करो जो तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते।

29												
	τῷ	τύπτοντί	σε	ἐπὶ	τὴν	σιαγόνα,	πάρεχε	καὶ	τὴν	ἄλλην;	καὶ	ἀπὸ
	–	मारनेवाले-को	तुझे	पर	–	गाल	दे	भी	–	दूसरा	और	से
	G3588	G5180	G4771	G1909	G3588	G4600	G3930	G2532	G3588	G0243	G2532	G0575

τοῦ	αἴροντός	σου	τὸ	ἱμάτιον,	καὶ	τὸν	χιτῶνα	μὴ	κωλύσῃς.
–	लेनेवाले-को	तेरा	–	कपड़ा	भी	–	कुर्ता	मत	रोक
G3588	G0142	G4771	G3588	G2440	G2532	G3588	G5509	G3361	G2967

यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यदि कोई तुम्हारा कोट ले ले तो उसे अपना कुर्ता भी ले लेने दो।

30												
	παντὶ	αἰτοῦντί	σε,	δίδου;	καὶ	ἀπὸ	τοῦ	αἴροντος	τὰ	σὰ,	μὴ
	हर-एक-को	मांगनेवाले-को	तुझसे	दे	और	से	–	लेनेवाले-से	–	तेरी	मत
	G3956	G0154	G4771	G1325	G2532	G0575	G3588	G0142	G3588	G4674	G3361

ἀπαίτει;
वापस-मांग
G0523

जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। यदि कोई तुम्हारा कुछ रख ले तो उससे वापस मत माँगो।

31											
	καὶ	καθὼς	θέλετε	ἵνα	ποιῶσιν	ὑμῖν	οἱ	ἄνθρωποι,	ποιεῖτε	αὐτοῖς	ὁμοίως.
	और	जैसा	चाहते-हो	कि	करें	तुम्हें	–	मनुष्य	करो	उनसे	उसी-प्रकार
	G2532	G2531	G2309	G2443	G4160	G4771	G3588	G0444	G4160	G0846	G3668

तुम अपने लिये जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो, तुम्हें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये।

32											
	καὶ	εἰ	ἀγαπᾶτε	τοὺς	ἀγαπῶντας	ὑμᾶς,	ποία	ὑμῖν	χάρις	ἐστίν?	καὶ
	और	यदि	प्रेम-करते-हो	–	प्रेम-करनेवालों-को	तुम्हारे	कैसी	तुम्हारी	धन्यवाद	है	भी
	G2532	G1487	G0025	G3588	G0025	G4771	G4169	G4771	G5485	G1510	G2532

γὰρ	οἱ	ἁμαρτωλοὶ	τοὺς	ἀγαπῶντας	αὐτοὺς,	ἀγαπῶσιν.
क्योंकि	–	पापी	–	प्रेम-करनेवालों-को	अपने	प्रेम-करते-हैं
G1063	G3588	G0268	G3588	G0025	G0846	G0025

“यदि तुम बस उन्हीं को प्यार करते हो, जो तुम्हें प्यार करते हैं, तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि अपने से प्रेम करने वालों से तो पापी तक भी प्रेम करते हैं।

33										
	καὶ	γὰρ,	ἐὰν	ἀγαθοποιῆτε	τοὺς	ἀγαθοποιοῦντας	ὑμᾶς,	ποία	ὑμῖν	χάρις
	और	क्योंकि	यदि	भलाई-करते-हो	–	भलाई-करनेवालों-की	तुम्हारी	कैसी	तुम्हारी	धन्यवाद
	G2532	G1063	G1437	G0015	G3588	G0015	G4771	G4169	G4771	G5485

ἐστίν?	καὶ	οἱ	ἁμαρτωλοὶ	τὸ	αὐτὸ	ποιοῦσιν.
है	भी	–	पापी	–	वही	करते-हैं
G1510	G2532	G3588	G0268	G3588	G0846	G4160

यदि तुम बस उन्हीं का भला करो, जो तुम्हारा भला करते हैं, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसा तो पापी तक करते हैं।

34

καὶ	ἐὰν	δανίσητε	παρ’	ὧν	ἐλπίζετε	λαβεῖν,	ποία	ὑμῖν	χάρις	ἐστίν?
और	यदि	उधार–देते–हो	से	जिनसे	आशा–करते–हो	लेने–को	कैसी	तुम्हारी	धन्यवाद	है
G2532	G1437	G1155	G3844	G3739	G1679	G2983	G4169	G4771	G5485	G1510

καὶ	ἁμαρτωλοὶ	ἁμαρτωλοῖς	δανίζουσιν,	ἵνα	ἀπολάβωσιν	τὰ	ἴσα.
भी	पापी	पापियों–को	उधार–देते–हैं	कि	वापस–लें	–	बराबर
G2532	G0268	G0268	G1155	G2443	G0618	G3588	G2470

> यदि तुम केवल उन्हीं को उधार देते हो, जिनसे तुम्हें वापस मिल जाने की आशा है, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसे तो पापी भी पापियों को देते हैं कि उन्हें उनकी पूरी रकम वापस मिल जाये।

35

πλὴν	ἀγαπᾶτε	τοὺς	ἐχθροὺς	ὑμῶν,	καὶ	ἀγαθοποιεῖτε,	καὶ	δανίζετε,	μηδὲν
परन्तु	प्रेम–करो	–	शत्रुओं–को	अपने	और	भलाई–करो	और	उधार–दो	कुछ–भी–नहीं
G4133	G0025	G3588	G2190	G4771	G2532	G0015	G2532	G1155	G3367

ἀπελπίζοντες;	καὶ	ἔσται	ὁ	μισθὸς	ὑμῶν	πολύς,	καὶ	ἔσεσθε	υἱοὶ	Ὑψίστου;
आशा–छोड़कर	और	होगा	–	प्रतिफल	तुम्हारा	बड़ा	और	होगे	पुत्र	परम–प्रधान–के
G0560	G2532	G1510	G3588	G3408	G4771	G4183	G2532	G1510	G5207	G5310

ὅτι	αὐτὸς	χρηστός	ἐστιν	ἐπὶ	τοὺς	ἀχαρίστους	καὶ	πονηρούς.
क्योंकि	वह	दयालु	है	पर	–	कृतघ्नों	और	दुष्टों
G3754	G0846	G5543	G1510	G1909	G3588	G0884	G2532	G4190

> “बल्कि अपने शत्रु को भी प्यार करो, उनके साथ भलाई करो। कुछ भी लौट आने की आशा छोड़ कर उधार दो। इस प्रकार तुम्हारा प्रतिफल महान होगा और तुम परम परमेश्वर की संतान बनोगे क्योंकि परमेश्वर अकृतज्ञों और दुष्ट लोगों पर भी दया करता है।

36

Γίνεσθε	οἰκτίρμονες,	καθὼς	[καὶ]	ὁ	Πατὴρ	ὑμῶν	οἰκτίρμων	ἐστίν.
दयालु–हो	करुणामय	जैसा	भी	–	पिता	तुम्हारा	करुणामय	है
G1096	G3629	G2531	G2532	G3588	G3962	G4771	G3629	G1510

> जैसे तुम्हारा परम पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो।

37

καὶ	μὴ	κρίνετε,	καὶ	οὐ	μὴ	κριθῆτε;	καὶ	μὴ	καταδικάζετε,	καὶ
और	न	न्याय–करो	और	नहीं	न	न्याय–किए–जाओगे	और	न	दोषी–ठहराओ	और
G2532	G3361	G2919	G2532	G3756	G3361	G2919	G2532	G3361	G2613	G2532

οὐ	μὴ	καταδικασθῆτε.	ἀπολύετε,	καὶ	ἀπολυθήσεσθε.
नहीं	न	दोषी–ठहराए–जाओगे	छोड़ो	और	छोड़े–जाओगे
G3756	G3361	G2613	G0630	G2532	G0630

> “किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी नहीं कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो तो तुम्हारा भी खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा करो, तुम्हें भी क्षमा मिलेगी।

38

δίδοτε,	καὶ	δοθήσεται	ὑμῖν.	μέτρον	καλὸν,	πεπιεσμένον,	σεσαλευμένον,
दो	और	दिया–जाएगा	तुम्हें	माप	अच्छा	दबा–हुआ	हिला–हुआ
G1325	G2532	G1325	G4771	G3358	G2570	G4085	G4531

ὑπερεκχυννόμενον,	δώσουσιν	εἰς	τὸν	κόλπον	ὑμῶν,	ᾧ	γὰρ	μέτρῳ	μετρεῖτε,
उमड़ता–हुआ	देंगे	में	–	गोद	तुम्हारी	जिस	क्योंकि	माप–से	नापते–हो
G5240	G1325	G1519	G3588	G2859	G4771	G3739	G1063	G3358	G3354

ἀντιμετρηθήσεται	ὑμῖν.
नापा–जाएगा	तुम्हें
G0488	G4771

> दूसरों को दो, तुम्हे भी दिया जायेगा। वे पूरा नाप दबा-दबा कर और हिला-हिला कर बाहर निकलता हुआ तुम्हारी झोली में उडेंलेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो, उसी से तुम्हें भी नापा जायेगा।”

39 Εἶπεν δὲ καὶ παραβολὴν αὐτοῖς, Μήτι δύναται τυφλὸς, τυφλὸν ὁδηγεῖν?
कहा और भी दृष्टान्त उनसे क्या सकता-है अंधा अंधे-को ले-जाना
G3004 G1161 G2532 G3850 G0846 G3385 G1410 G5185 G5185 G3594

οὐχὶ ἀμφότεροι εἰς βόθυνον ἐμπεσοῦνται?
क्या-नहीं दोनों में गड्ढा गिरेंगे
G3780 G0297 G1519 G0999 G1706

> उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, “क्या कोई अन्धा किसी दूसरे अन्धे को राह दिखा सकता है? क्या वे दोनों ही किसी गढ़े में नहीं जा गिरेंगे?

40 οὐκ ἔστιν μαθητὴς ὑπὲρ τὸν διδάσκαλον; κατηρτισμένος δὲ πᾶς ἔσται,
नहीं है चेला से-बड़कर – गुरु सिद्ध-किया-हुआ परन्तु हर-एक होगा
G3756 G1510 G3101 G5228 G3588 G1320 G2675 G1161 G3956 G1510

ὡς ὁ διδάσκαλος αὐτοῦ.
जैसा – गुरु अपना
G5613 G3588 G1320 G0846

> कोई भी विद्यार्थी अपने पढ़ाने वाले से बड़ा नहीं हो सकता, किन्तु जब कोई व्यक्ति पूरी तरह कुशल हो जाता है तो वह अपने गुरु के समान बन जाता है।

41 Τί δὲ βλέπεις τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου,
क्या और देखता-है – तिनका – में – आंख – भाई-की अपने
G5101 G1161 G0991 G3588 G2595 G3588 G1722 G3588 G3788 G3588 G0080 G4771

τὴν δὲ δοκὸν τὴν ἐν τῷ ἰδίῳ, ὀφθαλμῷ οὐ κατανοεῖς?
– परन्तु शहतीर – में – अपनी आंख नहीं देखता-है
G3588 G1161 G1385 G3588 G1722 G3588 G2398 G3788 G3756 G2657

> “तू अपने भाई की आँख में कोई तिनके को क्यों देखता है और अपनी आँख का लट्ठा भी तुझे नहीं सूझता?

42 πῶς δύνασαι λέγειν τῷ ἀδελφῷ σου, Ἀδελφέ, ἄφες ἐκβάλω τὸ κάρφος
कैसे सकता-है कहना – भाई-से अपने भाई दे निकालूं – तिनका
G4459 G1410 G3004 G3588 G0080 G4771 G0080 G0863 G1544 G3588 G2595

τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου, αὐτὸς τὴν ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σοῦ δοκὸν
– में – आंख अपनी स्वयं – में – आंख अपनी शहतीर
G3588 G1722 G3588 G3788 G4771 G0846 G3588 G1722 G3588 G3788 G4771 G1385

οὐ βλέπων? ὑποκριτά, ἔκβαλε πρῶτον τὴν δοκὸν ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σοῦ,
नहीं देखते-हुए कपटी निकाल पहले – शहतीर से – आंख अपनी
G3756 G0991 G5273 G1544 G4412 G3588 G1385 G1537 G3588 G3788 G4771

καὶ τότε διαβλέψεις τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ
और तब स्पष्ट-देखेगा – तिनका – में – आंख – भाई-की
G2532 G5119 G1227 G3588 G2595 G3588 G1722 G3588 G3788 G3588 G0080

σου ἐκβαλεῖν.
अपने निकालने-को
G4771 G1544

> सो अपने भाई से तू कैसे कह सकता है: ‘बंधु, तू अपनी आँख का तिनका मुझे निकालने दे।’ जब तू अपनी आँख के लट्ठे तक को नहीं देखता! अरे कपटी, पहले अपनी आँख का लट्ठा दूर कर, तब तुझे अपने भाई की आँख का तिनका बाहर निकालने के लिये दिखाई दे पायेगा।

43 Οὐ γάρ ἐστιν δένδρον καλὸν, ποιοῦν καρπὸν σαπρόν; οὐδὲ πάλιν
नहीं क्योंकि है पेड़ अच्छा उत्पन्न-करनेवाला फल सड़ा न-ही फिर
G3756 G1063 G1510 G1186 G2570 G4160 G2590 G4550 G3761 G3825

δένδρον σαπρὸν, ποιοῦν καρπὸν καλόν;
पेड़ सड़ा उत्पन्न-करनेवाला फल अच्छा
G1186 G4550 G4160 G2590 G2570

> “कोई भी ऐसा उत्तम पेड़ नहीं है जिस पर बुरा फल लगता हो। न ही कोई ऐसा बुरा पेड़ है, जिस पर उत्तम फल लगता हो।

44	ἕκαστον	γὰρ	δένδρον,	ἐκ	τοῦ	ἰδίου	καρποῦ,	γινώσκεται.	οὐ	γὰρ	ἐξ
	हर-एक	क्योंकि	पेड़	से	–	अपने	फल-से	जाना-जाता-है	नहीं	क्योंकि	से
	G1538	G1063	G1186	G1537	G3588	G2398	G2590	G1097	G3756	G1063	G1537
	ἀκανθῶν	συλλέγουσιν	σῦκα,	οὐδὲ	ἐκ	βάτου	σταφυλὴν	τρυγῶσιν.			
	कांटों	इकट्ठा-करते-हैं	अंजीर	न-ही	से	झाड़ी	अंगूर	तोड़ते-हैं			
	G0173	G4816	G4810	G3761	G1537	G0942	G4718	G5166			

> हर पेड़ अपने फल से ही जाना जाता है। लोग कँटीली झाड़ी से अंजीर नहीं बटोरते। न ही किसी झड़बेरी से लोग अंगूर उतारते हैं।

45	ὁ	ἀγαθὸς	ἄνθρωπος,	ἐκ	τοῦ	ἀγαθοῦ	θησαυροῦ	τῆς	καρδίας	‹αὐτοῦ›,		
	–	भला	मनुष्य	से	–	भले	खज़ाने-से	–	हृदय-के	अपने		
	G3588	G0018	G0444	G1537	G3588	G0018	G2344	G3588	G2588	G0846		
	προφέρει	τὸ	ἀγαθόν;	καὶ	ὁ	πονηρὸς,	ἐκ	τοῦ	πονηροῦ,	προφέρει	τὸ	
	निकालता-है	–	भला	और	–	दुष्ट	से	–	दुष्ट-से	निकालता-है	–	
	G4393	G3588	G0018	G2532	G3588	G4190	G1537	G3588	G4190	G4393	G3588	
	πονηρόν.	ἐκ	γὰρ	περισσεύματος	καρδίας,	λαλεῖ	τὸ	στόμα	αὐτοῦ.			
	दुष्ट	से	क्योंकि	बहुतायत-से	हृदय-के	बोलता-है	–	मुंह	उसका			
	G4190	G1537	G1063	G4051	G2588	G2980	G3588	G4750	G0846			

> एक अच्छा मनुष्य उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी से अच्छी बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य, जो उसके मन में बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता है। क्योंकि एक मनुष्य मुँह से वही बोलता है, जो उसके हृदय से उफन कर बाहर आता है।

46	Τί	δέ	με	καλεῖτε	Κύριε,	κύριε,	καὶ	οὐ	ποιεῖτε	ἃ	λέγω?
	क्या	और	मुझे	पुकारते-हो	प्रभु	प्रभु	और	नहीं	करते-हो	जो	कहता-हूं
	G5101	G1161	G1473	G2564	G2962	G2962	G2532	G3756	G4160	G3739	G3004

> “तुम मुझे ‘प्रभु, प्रभु’ क्यों कहते हो और जो मैं कहता हूँ, उस पर नहीं चलते?

47	Πᾶς	ὁ	ἐρχόμενος	πρός	με,	καὶ	ἀκούων	μου	τῶν	λόγων,	καὶ	ποιῶν
	हर-एक	–	आनेवाला	पास	मेरे	और	सुननेवाला	मेरे	–	वचनों-को	और	करनेवाला
	G3956	G3588	G2064	G4314	G1473	G2532	G0191	G1473	G3588	G3056	G2532	G4160
	αὐτούς,	ὑποδείξω	ὑμῖν	τίνι	ἐστὶν	ὅμοιος.						
	उन्हें	दिखाऊंगा	तुम्हें	किसके	है	समान						
	G0846	G5263	G4771	G5101	G1510	G3664						

> हर कोई जो मेरे पास आता है और मेरा उपदेश सुनता है और उस का आचरण करता है, वह किस प्रकार का होता है, मैं तुम्हें बताऊँगा।

48	ὅμοιός	ἐστιν	ἀνθρώπῳ	οἰκοδομοῦντι	οἰκίαν,	ὃς	ἔσκαψεν	καὶ	ἐβάθυνεν,	καὶ	
	समान	है	मनुष्य-के	बनानेवाले	घर	जिसने	खोदा	और	गहरा-किया	और	
	G3664	G1510	G0444	G3618	G3614	G3739	G4626	G2532	G0900	G2532	
	ἔθηκεν	θεμέλιον	ἐπὶ	τὴν	πέτραν;	πλημμύρης	δὲ	γενομένης,	προσέρηξεν	ὁ	
	रखा	नींव	पर	–	चट्टान	बाढ़-की	और	होने-पर	टकराई	–	
	G5087	G2310	G1909	G3588	G4073	G4132	G1161	G1096	G4366	G3588	
	ποταμὸς	τῇ	οἰκίᾳ	ἐκείνῃ,	καὶ	οὐκ	ἴσχυσεν	σαλεῦσαι	αὐτὴν,	διὰ	τὸ
	नदी-ने	–	घर-से	उस	और	नहीं	समर्थ-हुआ	हिलाने-को	उसे	के-कारण	–
	G4215	G3588	G3614	G1565	G2532	G3756	G2480	G4531	G0846	G1223	G3588
	καλῶς	οἰκοδομῆσθαι	αὐτήν.								
	अच्छी-तरह	बनाया-गया-था	उसे								
	G2573	G3618	G0846								

> वह उस व्यक्ति के समान है जो मकान बना रहा है। उसने गहरी खुदाई की और चट्टान पर नींव डाली। फिर जब बाढ़ आयी और जल की धाराएं उस मकान से टकराईं तो यह उसे हिला तक न सकीं, क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह बना हुआ था।

49 ὁ – G3588 | δὲ परन्तु G1161 | ἀκούσας, सुनकर G0191 | καὶ और G2532 | μὴ न G3361 | ποιήσας, करनेवाला G4160 | ὅμοιός समान G3664 | ἐστιν है G1510 | ἀνθρώπῳ मनुष्य–के G0444 | οἰκοδομήσαντι बनानेवाले G3618

οἰκίαν घर G3614 | ἐπὶ पर G1909 | τὴν – G3588 | γῆν भूमि G1093 | χωρὶς बिना G5565 | θεμελίου; नींव G2310 | ᾗ जिस–पर G3739 | προσέρηξεν टकराई G4366 | ὁ – G3588 | ποταμός, नदी G4215 | καὶ और G2532

εὐθὺς तुरन्त G2112 | συνέπεσεν, गिर–गया G4098 | καὶ और G2532 | ἐγένετο हुआ G1096 | τὸ – G3588 | ῥῆγμα विनाश G4485 | τῆς – G3588 | οἰκίας घर–का G3614 | ἐκείνης, उस G1565 | μέγα. बड़ा G3173

> “किन्तु जो मेरा उपदेश सुनता है और उस पर चलता नहीं, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने बिना नींव की धरती पर मकान बनाया। जल की धाराएं उससे टकराईं और वह तुरन्त ढह गया और पूरी तरह तहस-नहस हो गया।”